KNOWLEDGEABLE RESEARCH (KR)
ISSN: 2583-6633 | CODEN: KRABAU
International Open-Access Peer-Reviewed Refereed Multidisciplinary Journal
https://knowledgeableresearch.com
Vol. 5, Issue 08,2026

Received: 08/07/2026 | Accepted: 23/08/2026 | Published: 30/08/2026

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

***प्रिया शर्मा**

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

शैलेन्द्र कुमार

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

सारांश: *प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने पर्यावरणीय संकट को गंभीर बना दिया है। ऐसे में विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का विकास अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वे भविष्य के जागरूक नागरिक, निर्णयकर्ता और सामाजिक परिवर्तन के वाहक होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शाहजहाँपुर महानगर क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.ए. एवं बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर के **130** विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा पर्यावरण जागरूकता के मापन हेतु डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत पर्यावरण जागरूकता योग्यता मापनी का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि छात्र एवं छात्राओं, कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लगभग समान स्तर पर विद्यमान है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में पर्यावरण शिक्षा को अधिक व्यवहारिक, मूल्यपरक एवं गतिविधि-आधारित बनाकर विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।*

Keywords: *पर्यावरण जागरूकता, स्नातक विद्यार्थी, पर्यावरण शिक्षा, उच्च शिक्षा, शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी, कला एवं विज्ञान वर्ग, पर्यावरण संरक्षण।*

***Corresponding Author:**
प्रिया शर्मा
Email: priyaspn82082@gmail.com

प्रस्तावना:-

पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है। यह हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता है और हमारे समग्र कल्याण को सुनिश्चित करता है। हमारे ग्रह के जल, मिट्टी, वायु, वनस्पति और वन्यजीव हमारे जीवन का आधार बनाते हैं। परंतु वर्तमान समय में तीव्र औद्योगीकरण, शहरीकरण, बढ़ती जनसंख्या, उपभोक्तावादी संस्कृति और मनुष्य की भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँच रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मिट्टी का क्षरण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, बढ़ता तापमान, ओजोन परत का क्षय, जैव विविधता में तीव्र कमी, प्लास्टिक प्रदूषण, और महासागरीय प्रदूषण - ये सभी गंभीर समस्याएँ विश्व स्तर पर चिंता का प्रमुख विषय बन गई हैं।

पर्यावरण जागरूकता का तात्पर्य प्रकृति और मानवीय गतिविधियों के बीच के नाजुक संतुलन को समझना, पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान करना, उनके कारणों और परिणामों को समझना, और उनके समाधान के लिए व्यक्तिगत तथा सामूहिक जिम्मेदारी लेना है।

जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगिकरण की ओर तेजी से बढते कदम, ऊर्जा की बढ़ती आवश्यकताओं तथा वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकीय विकास के फलस्वरूप पहले ही हो चुके पर्यावरण नुकसान की भरपाई

सामूहिक चिन्तन, इच्छाशक्ति व प्रयास के बिना नहीं हो सकती है। पर्यावरण को आज तक हुए नुकसान को तब तक बदला नहीं जा सकता जब तक हम सामूहिक रूप से इस समस्या पर विचार करके इसके लिए लोगों में जागरूकता लाए जाने तथा उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक न समझे ताकि उनकी सोच में बदलाव लाकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। पर्यावरणीय प्रबंधन और संरक्षण कार्यक्रम में शिक्षा, पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और प्रशिक्षण पर जोर है। अपने पर्यावरण के प्रति आस्था रखने की समझ तथा पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत होने पर व्यक्तियों को पर्यावरणीय संरक्षण पर आयोजित सेमिनारों तथा कार्यक्रमों में प्रतिभाग करना आवश्यक है। पर्यावरण जागरूकता तथा प्रशिक्षण व इसके संरक्षण और उसमें सुधार लाए जाने संबंधित क्षमता/कौशल विकास करने एवं पर्यावरण और लोगों के मध्य की जानकारी सभी स्तर के लोगों को देने के लिए यह एक महत्वपूर्ण योजना है।

हालांकि, वर्तमान भारत में तीव्र शहरीकरण, आधुनिकीकरण, और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण, परंपरागत पर्यावरणीय मूल्यों में गिरावट आ रही है। युवा पीढ़ी अक्सर पश्चिमी उपभोक्तावादी मानसिकता से प्रभावित होती है। ऐसे में, पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को पुनरुद्धार करना और आधुनिक पर्यावरणीय विज्ञान से जोड़ना आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

चावड़ा, कुलदीप (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि लिंग के संबंध में उनके बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था और शिक्षा के स्तर के संबंध में उनके बीच नगण्य अंतर पाया गया। देवी, कुसुम (2021) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि बेसिक स्तर के अध्यापकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान थी। वेमुला, डॉ. मुट्टू और देवेंद्र, डॉ. भुक्या (2021) द्वारा किये गये अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का स्तर अच्छा था। निजी स्कूल के विद्यार्थियों में सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर पर्यावरण जागरूकता थी और 9वीं कक्षा के छात्रों में 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पर्यावरण जागरूकता का स्तर था। मेघवाल, गुड़िया (2022) ने अपने अध्ययन में पाया गया कि सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। मस्तैनया, भुवनेश्वर सिंह (2023) ने पाया कि शैक्षिक उपलब्धि का मान माध्यमिक स्तर तथा जूनियर स्तर के अध्यापकों का पर्यावरणीय अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक, धनात्मक सहसम्बन्ध था। पालीवाल, माधुरी (2024) ने पाया कि स्नातक स्तर के उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता, निम्न वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता से सार्थक रूप से उच्च थी। स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर लिंग सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं लिंग की अन्तक्रिया का कोई प्रभाव नहीं पाया गया। कल्याण के. (2025) के अध्ययन के परिणाम लिंग के आधार पर पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं, जिसमें छात्रों ने छात्राओं की तुलना में उच्च पर्यावरण अभिवृत्ति प्रदर्शित किया। स्कूल प्रबंधन के प्रकार ने भी एक भूमिका निभाई, क्योंकि सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों ने निजी सहायता प्राप्त विद्यालयों की तुलना में अधिक पर्यावरण अभिवृत्ति प्रदर्शित की। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी-माध्यम के विद्यार्थियों ने कन्नड़-माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक पर्यावरण अभिवृत्ति प्रदर्शित की। हालांकि, शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यह अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के वर्तमान स्तर, उनके ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार के बीच संबंधों का एक व्यापक और विस्तृत चित्र प्रस्तुत करेगा। यह जानकारी शिक्षा नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों, और शोधकर्ताओं को उच्च शिक्षा में पर्यावरणीय शिक्षा को और अधिक प्रभावी और व्यावहारिक बनाने में सहायता करेगी। विद्यार्थी समाज के भविष्य के नेता, निर्णय-निर्माता, पेशेवर और सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत हैं। यदि वे पर्यावरण के प्रति जागरूक, संवेदनशील और सक्रिय हैं, तो वे अपने निर्णयों, नीतियों और व्यावहारिक कार्यकलापों के माध्यम से समाज को सकारात्मक दिशा में ले जा सकते हैं। यह अध्ययन जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण वर्ग में पर्यावरणीय चेतना को मजबूत करने और उसे सुदृढ़ करने का आधार बन सकता है।

समस्या कथनः-

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

समस्या में सम्मिलित प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण:-

- **स्नातक स्तर:-** प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर से आशय महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा संचालित स्नातक के पाठ्यक्रम यथा- बी0ए0, तथा बी0एस0सी0 से है।
- **विद्यार्थी:-** प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी से तात्पर्य जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र के महाविद्यालयों के बी0ए0 तथा बी0एस0सी0 के पंचम सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों से है।
- **पर्यावरण जागरूकता:-** पर्यावरण सम्बन्धी तथ्यों, प्रत्ययों, प्रक्रियाओं का ज्ञान तथा बोध कराया जाता है इसके अलावा पर्यावरण के कारकों तथा घटकों की पारस्परिक निर्भरता, समस्याओं तथा समाधान की जानकारी प्रदान की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं-

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं अग्रलिखित हैं-

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन:-

प्रस्तुत अध्ययन को निम्नलिखित बिन्दुओं तक सीमित रखा गया है-

- प्रस्तुत अध्ययन में जनपद शाहजहाँपुर के महानगर क्षेत्र को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध महाविद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल स्नातक स्तर के बी.ए. तथा बी.एस.सी. के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल पंचम् सेमेस्टर के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन विधि- प्रस्तुत अध्ययन की विधि न्यादर्ष सर्वेक्षणात्मक पद्धति पर आधारित है। अतः यह मूलतः वैज्ञानिक प्रविधि के अन्तर्गत निहित है।

जनसंख्या:- प्रस्तुत परियोजना कार्य में समग्र या समष्टि या जनसंख्या से आशय शाहजहाँपुर महानगर के उन सभी विद्यार्थियों से है जो स्नातक स्तर के बी**0**ए**0** तथा बी**0**एस**0**सी**0** के पंचम् सेमेस्टर में अध्ययनरत् हैं।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि:- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन के लिए द्विस्तरीय न्यादर्श प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रथम स्तर पर शाहजहाँपुर महानगर के महाविद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें शाहजहाँपुर महानगर **50** प्रतिशत महाविद्यालयों का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि से किया गया। इस प्रकार महानगर के कुल **05** महाविद्यालयों में से **02** महाविद्यालय न्यादर्श के रूप में चयनित हुए। द्वितीय स्तर पर न्यादर्श के रूप में स्नातक स्तर के बी**0**ए**0** तथा बी**0**एस**0**सी**0** के पंचम् सेमेस्टर के विद्यार्थियों के चयन हेतु चयनित महाविद्यालय में सर्वेक्षण के दिन उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या का **25**प्रतिशत लिया गया है। इसके लिए क्रमागत न्यादर्श प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया। जिस हेतु उनकी उपस्थिति पंजिका को आधार बनाया गया है।

तालिका संख्या 01

महाविद्यालयवार चयनित स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संख्या

क्र.सं.	महाविद्यालयों के नाम	उपस्थित विद्यार्थी	चयनित विद्यार्थी
1	स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर	340	85
2	सन् इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी, शाहजहाँपुर	182	45
कुल		**522**	**130**

इस प्रकार शाहजहाँपुर महानगर के 02 महाविद्यालयों के कुल 130 स्नातक स्तर के विद्यार्थी न्यादर्श के रूप में चयनित हुए।

प्रयुक्त उपकरण:- डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत पर्यावरण जागरूकता योग्यता मापनी पर्यावरण जागरूकता सम्बन्धी योग्यता एवं चेतना को मापने के लिए उपर्युक्त मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीकी:- प्रस्तुत शोध में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है, इसके लिए मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान की मानक त्रुटि के उपरान्त टी-मान की गणना की गयी है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

परिकल्पना संख्या 1 का परीक्षण एवं विश्लेषण-

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ''

तालिका संख्या 02

परिकलित मूल्य	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी परिगणनाएं	
	छात्र	छात्रायें
माध्य (Mean)	75.59	71.54
मानक विचलन (SD)	9.59	11.37
संख्या (N)	62	68
मानक त्रुटि (SE_M)	1.84	
माध्य अन्तर (M_1 - M2)	0.86	
स्वतन्त्र्यांश (df)	128	
टी0 मान (t-value)	0.47	
5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.96	
सार्थकता (Significant)	0.47<1.96 (अन्तर असार्थक, परिकल्पना स्वीकृत)	

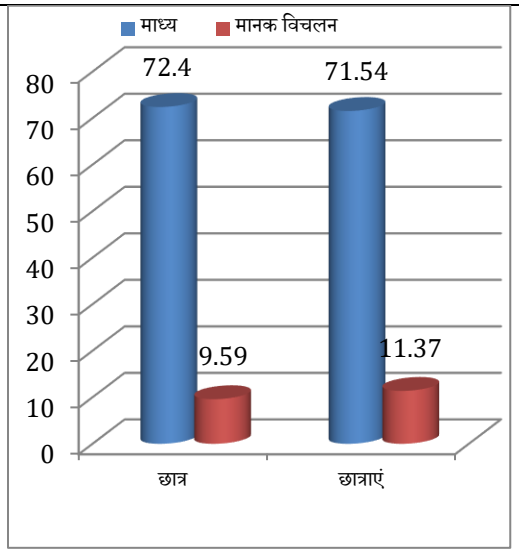

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्य 72.40 तथा छात्राओं का माध्य 71.54 प्राप्त हुआ, जबकि मानक विचलन क्रमश: 9.59 तथा 11.37 प्राप्त हुआ है। अध्ययन से प्राप्त छात्र एवं छात्राओं के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। क्योंकि सार्थकता स्तर 0.05 पर टी-मान का परिकल्पित मान 0.47 तालिका मान 1.96 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

शोधकार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' माध्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य, छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य की तुलना में थोड़ा अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता छात्राओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है।

परिकल्पना संख्या 2 का परीक्षण एवं विश्लेषण-

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका संख्या 03

परिकलित मूल्य	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी परिगणनाएं	
	कला वर्ग के विद्यार्थी	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी
माध्य (Mean)	71.82	72.12
मानक विचलन (SD)	10.55	10.59
संख्या (N)	73	57
मानक त्रुटि (SE_M)	1.87	
माध्य अन्तर (M_1 - M2)	0.30	
स्वतन्त्र्यांश (df)	128	
टी0 मान (t-value)	0.16	
5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.96	
सार्थकता (Significant)	0.16<1.96 (अन्तर असार्थक, परिकल्पना स्वीकृत)	

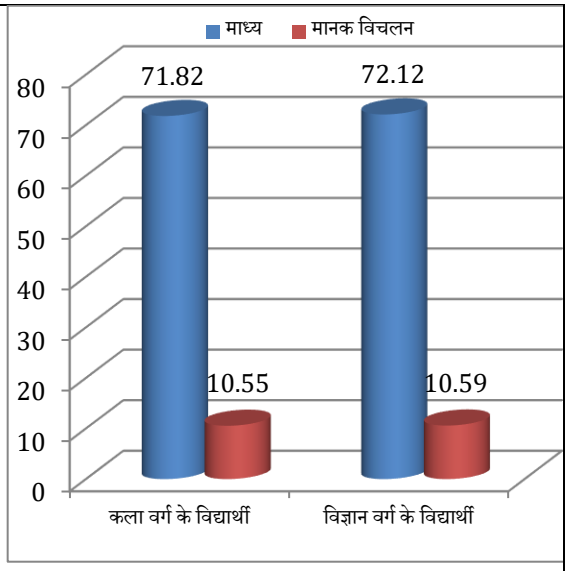

तालिका संख्या 03 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्य 71.82 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का माध्य 71.12 प्राप्त हुआ, जबकि मानक विचलन क्रमशः 10.55 तथा 10.59 प्राप्त हुआ है। अध्ययन से प्राप्त कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। क्योंकि सार्थकता स्तर 0.05 पर टी-मान का परिकल्पित मान 0.16 तालिका मान 1.96 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शोधकार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर उनके अध्ययन वर्ग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। माध्य का अवलोकन करने से भी ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य लगभग समान है। इसका सम्भवतः कारण यह हो सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में

पर्यावरण विषय को वैकल्पिक रूप में जोड़ा गया है। जो उनमें पर्यावरण में रूचि उत्पन्न करने में काफी मदद करता है। जिससे दोनो समूहों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता औसत स्तर की और समान हो सकती है।

परिकल्पना संख्या 3 का परीक्षण एवं विश्लेषण-

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका संख्या 04

परिकलित मूल्य	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता सम्बन्धी परिगणनाएं	
	शहरी विद्यार्थी	ग्रामीण विद्यार्थी
माध्य (Mean)	71.93	71.98
मानक विचलन (SD)	10.91	10.07
संख्या (N)	76	54
मानक त्रुटि (SE_M)	1.86	
माध्य अन्तर (M_1 - M2)	0.05	
स्वतन्त्र्यांश (df)	128	
टी0 मान (t-value)	0.03	
5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.96	
सार्थकता (Significant)	0.03<1.96 (अन्तर असार्थक, परिकल्पना स्वीकृत)	

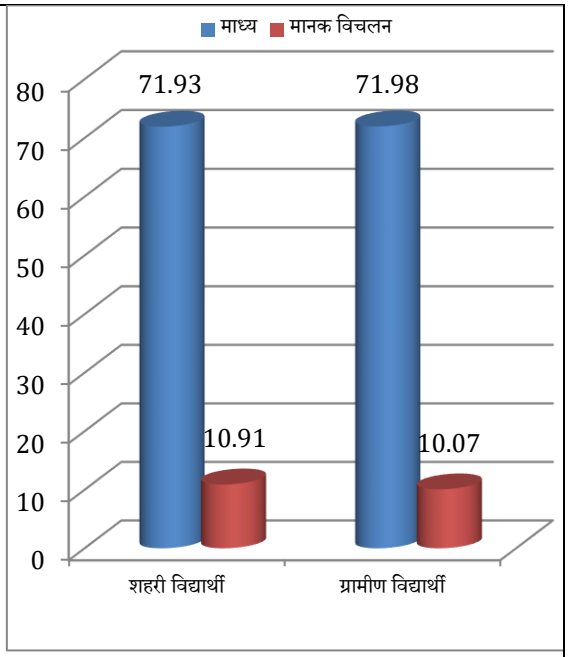

तालिका संख्या 04 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का माध्य 71.93 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का माध्य 71.98 प्राप्त हुआ, जबकि मानक विचलन क्रमषः 10.91 तथा 10.07 प्राप्त हुआ है। अध्ययन से प्राप्त शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। क्योंकि सार्थकता स्तर 0.05 पर टी-मान का परिकल्पित मान 0.03 तालिका मान 1.96 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शोधकार्य से पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकार की जाती है तथा यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर उनके निवास क्षेत्र का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। माध्य का अवलोकन करने से भी ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य लगभग समान है।

इसका सम्भवतः कारण यह हो सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का परिवेश उन्हें पर्यावरण में रूचि उत्पन्न करने में काफी मदद करता है। जिससे ग्रामीण विद्यार्थी प्रकृति से जुड़े रहते हैं, पेड़-पौधों की छांव में रहकर बड़े होते हैं तथा पर्यावरण के प्रति सक्रिय रहते हैं जबकि शहरी विद्यार्थी शहरीकरण के कारण पर्यावरण से दूर रहते हैं परन्तु

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

विद्यालयों में पर्यावरण सम्बन्धी अनेक कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने, खेलने आदि से उनकी पर्यावरण के प्रति जागरूकता में काफी सुधार आता है जिस कारण दोनों समूहों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

निष्कर्ष:-

उद्देश्य के आधार पर प्राप्त निष्कर्षः-

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का माध्य (72.40), छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य(71.54) की तुलना में थोड़ा अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता छात्राओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य(71.82), विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य (72.12) के लगभग समान पाया गया।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का माध्य(71.93), ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता के माध्य(71.98) के लगगभ समान पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता लगभग समान पायी गई।

परिकल्पना परीक्षण के आधार पर प्राप्त निष्कर्षः-

अध्ययन में विद्यार्थियों के लिंग, अध्ययन वर्ग तथा निवास क्षेत्र के आधार पर 03 परिकल्पनायें निर्मित की गयी थीं जिनमें से विश्लेषण के उपरान्त तीनों परिकल्पनायें स्वीकृत हुईं, जिनसे प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं-

1. परिकल्पना संख्या 01 ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' के टी-मान (0.47) परीक्षण के उपरान्त पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. परिकल्पना संख्या 02 ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' के टी-मान (0.16) परीक्षण के उपरान्त पाया गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. परिकल्पना संख्या 03 ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' के टी-मान (0.03) परीक्षण के उपरान्त पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थः-

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष उच्च शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा दोनों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का स्तर समरूप नहीं है, अतः विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को केवल एक औपचारिक अनिवार्य पत्र के रूप में न रखकर, उसे सभी विषयों में 'समेकित' रूप से सम्मिलित करने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम निर्माणकर्ताओं को चाहिए कि वे पर्यावरण शिक्षा को बहुविषयी दृष्टिकोण से जोड़ते हुए स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं, भारतीय परम्पराओं, संविधानिक प्रावधानों, सतत विकास लक्ष्यों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्देशों के अनुरूप व्यावहारिक, प्रोजेक्ट-आधारित और समुदाय-केन्द्रित गतिविधियों को पाठ्य-सामग्री का अनिवार्य अंग बनाएं ताकि विद्यार्थी पुस्तक ज्ञान के साथ-साथ प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से भी पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व का बोध विकसित कर सकें। उच्च शैक्षिक संस्थानों में माइक्रो-टीचिंग, प्रैक्टिकल लेसन, विद्यालय अनुभव कार्यक्रम तथा इंटर्नशिप के दौरान प्रशिक्षुओं से ऐसी पाठ योजनाएँ बनवाना उपयोगी होगा जिनमें वृक्षारोपण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, प्लास्टिक उन्मूलन, स्वच्छता अभियान तथा सामुदायिक जागरूकता रैलियों जैसी गतिविधियाँ अनिवार्य रूप से सम्मिलित हों। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि केवल ज्ञानात्मक स्तर पर पर्यावरण जागरूकता विकसित करना पर्याप्त नहीं, बल्कि मूल्य एवं व्यवहार स्तर पर

परिवर्तन आवश्यक है, अतः विद्यार्थियों को मूल्य-आधारित, सहभागितापूर्ण, समस्या-समाधान-आधारित तथा परियोजना-आधारित शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, आलोचनात्मक सोच, सहयोग की भावना तथा उत्तरदायी नागरिकता के गुणों को विकसित करना होगा। नीति-निर्माताओं और प्रशासकों के लिए यह शोध संकेत करता है कि महाविद्यालयों में हरित परिसर की संकल्पना, इको-क्लब, एन.एस.एस/एन.सी.सी. गतिविधियाँ, सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रम तथा नियमित पर्यावरणीय लेखन, निबंध, पोस्टर, स्लोगन, वाददृविवाद आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित कर विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए। यदि शोध के निष्कर्षों के आलोक में पाठ्यक्रम, शिक्षणदृअधिगम प्रक्रियाओं, मूल्यांकन और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में समन्वित परिवर्तन किए जाएँ, तो उच्च शिक्षा संस्थान न केवल पर्यावरण के प्रति जागरूक स्नातक तैयार कर सकेंगे, बल्कि समाज में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की एक सशक्त संस्कृति के विकास में भी सक्रिय योगदान दे सकेंगे।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

पर्यावरण शिक्षा एक बहुत ही विस्तृत विषय है। यह विषय अन्य सभी विषयों की तुलना में अभी नया है। इसलिए इसमें ऐसे कई क्षेत्र है जिन पर शोध किया जा सकता है। जिनके लिए सुझाव निम्नलिखित है-

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल शाहजहाँपुर नगर क्षेत्र के महाविद्यालयों पर किया गया है। भविष्य में इसी प्रकार का अध्ययन शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के संदर्भ में किया गया है भविष्य में इसी प्रकार का अध्ययन शिक्षा के अन्य स्तरों के विद्याथिर्यों जैसे माध्यमिक स्तर, परास्नातक स्तर, व्यावसायिक स्तर पर किया जा सकता है।
3. यह अध्ययन छोटे न्यादर्श पर किया गया है भविष्य में इसी प्रकार का अध्ययन बड़े स्तर जैसे जनपद, मण्डल या राज्य स्तर पर भी किया जा सकता है।
4. उच्च शैक्षणिक उपलब्धि एवं निम्न शैक्षणिक उपलेब्धि वाले विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
5. अभिभावकों की शिक्षा का विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर प्रभाव का अध्ययन भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, आर.ए. (2013), 'पर्यावरण शिक्षा' मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- कपिल, एच.के. (2015), 'अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में)', आगराः भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट।
- कपिल, एच.के. एवं सिंह, डॉ. ममता (2015), 'सांख्यिकी के मूल तत्व', आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- लाल, प्रो. रमन बिहारी एवं डॉ. कृष्ण कान्त (2015), 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ', मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- गोयल, एम0के0 एवं महाराणा निशा (2017), 'पर्यावरण शिक्षा' आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशनस।
- शुक्ला, सी.एस. (2016), 'पर्यावरण शिक्षा', लखनऊः आलोक प्रकाशन अमीनाबाद।
- गुप्ता, प्रो. एस.पी. (2020), 'अनुसंधान संदर्शिका (सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि)', प्रयागराजः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।
- गुप्ता, प्रो. एस.पी. एवं गुप्ता, डॉ. अलका (2022), 'सांख्यिकीय विधियाँ', इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।

शोध जर्नल्स

Kuldeep Chavada (2020),"An analysis of environmental awareness ability among college students", *The International Journal of Indian Psychology,* Vol. 8, Issue.2, Page No. 1427-1430. file:///C:/Users/docomant/Downloads/18.01.162.20200802.pdf

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

कुसुम देवी (2021). 'बेसिक स्तर के अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'. *International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology*, 8(2), 231-232. https://ijsrset.com/paper/7059.pdf

Dr. Muttu. Vemula & Dr. Bhukya Devendar (2021), "A Study on the Environmental Awareness of Secondary Grade Students", *Nat. Volatiles & Essent. Oils,* Vol. 8, Issue.6, Page No.3327-3352. file:///C:/Users/docomant/Downloads/309%20(1).pdf

गुड़िया मेघवाल (2022). 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन'. *International Journal of Creative Research Thoughts,* 10(5), 191-195. https://ijcrt.org/papers/IJCRTQ020037.pdf

भुवनेश्वर सिंह मस्तैनया (2023). 'माध्यमिक स्तर एवं जूनियर स्तर के अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'. *Shrinkhala Ek Shodhparak Vaicharik Patrika,* X(VI), http://www.socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=5258

माधुरी पालीवाल (2024). 'पर्यावरण जागरूकता का वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन (स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के संबंध में). *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*, 21(03), 06-08. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/14761/29257

Dr. Kalyani K.(2025). Environmental Attitude among Secondary School Students. *International Journal of Engineering Technology and Management Sciences.* 2(09), 342-350. https://ijetms.in/Vol-9-issue-2/Vol-9-Issue-2-42.pdf